

गुरु जंभेश्वर की सामाजिक व दार्शनिक शिक्षाओं की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता

डॉ.मौ.इमरान खान

अध्यक्ष/असि.प्रोफेसर-हिन्दीविभाग, एम.जी.एम.(पी.जी) कॉलेज,सम्भल (उ.प्र.),

ई.मेल- mohdimranmgm@gmail.com

Article: Received: 01/12/2025, Accepted: 27/12/2025, Published:30/12/2025

D.O.I. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22935061>



© 2025 The Author(s). This is an Open Access article/ Journal distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are properly credited (<https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>)

शोध सार - गुरु जंभेश्वर संत काव्य परंपरा के इतिहास में अनमोल हीरा है। जम्भोजी का जन्म सन् 1451 ई. में राजस्थान के नागौर जिले के पीपासर गाँव में हुआ। आधुनिकता व उत्तरआधुनिकता के दौर में भी गुरु जंभेश्वर का सामाजिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक है। आप बिश्नोई समाज के प्रवर्तक हैं। आपने 34 वर्ष की आयु में ही बिश्नोई पंथ की स्थापना की। अपने 51 वर्षों तक पूरे भारतवर्ष का भ्रमण किया और ज्ञानोपदेश दिया। आप भारतवर्ष के ही नहीं पूरे विश्व के महान पर्यावरणविद् माने जाते हैं। आपका नाम 15 वीं सदी के महान समाज सुधारकों में आता है। आपने मानव के लिए ही नहीं बल्कि मानवोत्तर प्राणियों व आध्यात्मिकता के लिए 29 नियम बनाए जो मनुष्य और समाज के लिए आज भी मील का पत्थर साबित हो रहे हैं। जिनमें 8 नियम जीवजंतुओं और जैव विविधता की रक्षा के लिए 7 समाज के लिए 10 स्वयं के स्वास्थ्य के लिए और 4 आध्यात्मिक उत्थान के लिए हैं।

गुरु जंभेश्वर की सामाजिक और दार्शनिक शिक्षाएं विशेषकर पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता, व्यक्तिगत स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से संबंधित शिक्षाएं आपके काव्य संग्रह 'सबदवाणी' में संकलित हैं जो मनुष्य को प्रकृति संतुलन एवं संतुलित जीवन शैली के लिए मार्ग प्रशस्त करती हैं। वर्तमान में प्रदूषण सामाजिक अशांति और स्वास्थ्य संबंधित चुनौतियाँ अत्यंत प्रासंगिक हैं। यून तो किसी भी संत अथवा योगी की शिक्षाएँ किसी वर्ग विशेष, जाति विशेष अथवा धर्म विशेष के लिए नहीं होती, इनकी शिक्षाओं को किसी देश की सीमा में भी नहीं बांधा जा सकता। इनका सामाजिक, दार्शनिक दृष्टिकोण एवं शिक्षाएँ संपूर्ण विश्व के लिए हैं इनकी शिक्षाओं का केवल एकमात्र उद्देश्य मानव कल्याण है।

मुख्य शब्द (Keywords): गुरु जंभेश्वर (जम्भोजी), बिश्नोई पंथ (29 नियम), पर्यावरण संरक्षण, सबदवाणी, सामाजिक समरसता, मानव कल्याण

गुरु जंभेश्वर जी ने मध्यकालीन अन्य संतों की भाँति जातिगत भेदभाव का खंडन किया आपने गुरु गोरखनाथ, कबीरदास व तुलसीदास की भाँति आपका भी मानना है कि मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान होता है। आपने सामाजिक समानता व सामाजिक न्याय को समाज के लिए सर्वोत्तम घटक मानते हैं। रामानंद जी ने भी कहा है- 'जाति पांति पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।' अर्थात् भगवान किसी की जाति या पंथ नहीं पूछते बल्कि जो भी सच्चे मन से उसकी भक्ति करता है भगवान का हो जाता है। अपने स्त्री पुरुष की समानता की ऐसे समय में वकालत की जब स्त्री को केवल भोग्य के रूप में ही देखा जाता था शिक्षा का अधिकार भी नहीं था। अपने मध्यकालीन समाज में लैंगिक समानता व नारी शिक्षा की बात करके ने केवल नारी के सामाजिक उत्थान की बात की अपितु नारी अस्मिता की बात करके संपूर्ण विश्व को एक नवीन दृष्टिकोण से परिचित कराया। गुरुजी ने तत्कालीन समाज को नशे से दूर रहकर संयमित जीवन जीने का उपदेश दिया। वर्तमान समय में नशाखोरी समाज के लिए अभिशाप बनती जा रही है। हमारी युवा पीढ़ी में दिन व दिन नशे की लत बढ़ती जा रही है जो समाज और उन परिवारों के लिए गहन चिंता का विषय है।

गुरु जम्भेश्वर ने पर्यावरण के सन्दर्भ में जो विचार एवं चिंतन दिया है। वह उनका वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। आज संपूर्ण विश्व के लिए जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता का संकट बढ़ता ही जा रहा है। मनुष्य अपनी सुख सुविधाओं के लिए विकास के नाम पर निरंतर प्रकृति का दोहन कर रहा है। जिसके कारण वर्तमान पीढ़ी और आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवनयापन का संकट बढ़ता ही जा रहा है। आज देश व दुनिया के अधिकांश शहरों में वायु प्रदूषण के कारण सांस लेना मुश्किल होता जा रहा है। इसलिए जम्भोजी ने कहा - "मनुष्य का हित प्रकृति, वन्यजीव और वनस्पति के संरक्षण में है यही मानव जीवन के लिए मुख्य आधार है" इस संदर्भ में राजस्थान में कहावत प्रचलित है- 'सिर साठे रुख रहे, तो भी सस्तो जाण।' (सिर कट जाए पर पेड़ न कटे) युक्त वाक्य संपूर्ण संसार के लिए आदर्श वाक्य है। मैं यही कह सकता हूँ यदि प्रकृति सुरक्षित एवं संरक्षित है तो संसार में मनुष्य, जीवजंतु सभी सुरक्षित व संरक्षित हैं।

जम्भोजी ने प्रकृति और जीवजंतु के साथ सामंजस्य बिठाते हुए एक शाश्वत जीवन दर्शन दिया। गुरुजी की शिक्षाएं केवल धार्मिक ही नहीं बल्कि सामाजिक दूरदर्शिता का परिणाम है जो वर्तमान समय में भी भौतिकवादी पर्यावरण संकटग्रस्त विश्व के लिए एक व्यावहारिक और नैतिक मार्गदर्शक हैं।

साहित्यावलोकन- मध्यकालीन संत साहित्य में गुरु जम्भोजी एक सुधारवादी विचारक थे। आपके समाज सुधारक संबंधी विचार अनुपम हैं। आपने समाज में व्याप्त उन समस्त बुराइयों का विरोध किया जो समाज के लिए घातक या अभिशाप सिद्ध हो सकती थी जैसे सामाजिक कुरीतियाँ, कुप्रथाओं, जीवहत्या, पाखंड, अंधविश्वास और सामाजिक भेदभाव का डटकर विरोध किया। आपके सामाजिक एवं दार्शनिक विचारों का अध्ययन करने के उपरांत ऐसा प्रतीत होता है कि आप पर कबीरदास जी का काफी प्रभाव था। आपके सामाजिक एवं दार्शनिक चिन्तन की बुनियाद लगभग एक जैसी है। कबीर का दर्शन मानवतावादी समतावादी तथा सुधारवादी है। जो जाति पांति, धार्मिक आडंबरों और रूढ़ियों का कर विरोध करता है वैसे ही गुरु जम्भोजी के सामाजिक एवं दार्शनिक विचार हैं। मध्यकालीन साधु संत, महात्माओं अथवा योगियों की बात करें तो आप सभी सदैव लोक कल्याण तथा ईश्वर भक्ति में लीन रहने की बात करते हैं। ये सांसारिक मोह माया या सत्ता के प्रभाव से पूर्ण रूप से सुरक्षित थे। वर्तमान में ज्यादातर धार्मिक मातालंबियों पर सांसारिक मोह माया तथा सत्ता का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है लेकिन कुछ ऐसे भी हुए हैं या वर्तमान में हैं जो कभी सत्ता के प्रभाव को स्वीकार नहीं करते बल्कि सत्ता की आँखों में आँख डालकर मानव कल्याण और लोक कल्याण की बात करते हैं यहाँ मैं कुम्भनदास के एक संस्मरण की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा। जब कवि कुम्भनदास मुगल बादशाह अकबर के निमंत्रण पर फतेहपुर सीकरी गए थे तब उन्होंने यह पद गाकर अपनी ईश्वर से विरक्ति और भगवान के प्रति समर्पण का भाव व्यक्त किया था- संत का सीकरी (राजा के दरवार/सांसारिक सुखों) से क्या लेना देना ? यहाँ आने-जाने में तो मेरी चप्पलें टूट गई और मैं प्रभु का नाम लेना भी भूल गया।

"संतन को कहा सीकरी सो काम? आवत जात पनहियाँ टूटी, बिसरि गयौ हरिनाम

जाकौ मुख देखैं दुख लागू ताको करिबे परी सलाम। कुम्भनदास लाल गिरधर और सब बेकाम।।"¹

राजस्थान की इस पावन भूमि से मध्यकालीन भक्ति आंदोलन की भीनी भीनी सुगंध आती है जो संपूर्ण वातावरण को अपनी खुशबू से भर देती है क्योंकि यह भूमि केवल वीर योद्धाओं की नहीं बल्कि यहाँ उच्च कोटि के संतों की निर्विध श्रृंखला रही है जैसे दादूदयाल, रज्जब, पीपा, मीराबाई तथा सुंदरदास जैसे संतों ने अपनी वाणी से पवित्र किया है। गुरु जम्भोजी मध्यकालीन संत परंपरा के प्रख्यात समाज सुधारक एवं संत थे। इन्हीं के प्रयासों से राजस्थान में भक्ति आंदोलन को बल मिला। आपके साहित्य एवं दर्शन का प्रमुख उद्देश्य मनुष्य को श्रेष्ठ बनाना एवं लोक कल्याण के लिए समर्पित करना है।

गुरु जम्भोजी के द्वारा दिया गया चिंतन एवं उपदेश वैश्विक हैं इसे हम देश, धर्म, वर्ग एवं वर्ण की सीमाओं में नहीं बाँध सकते। आपकी सबदवाणी में कुल 120 पद हैं इनमें बहुत से पद गहन दार्शनिक तन, अद्वैतवाद, जीव, ब्रह्म की एकता और माया के रूप को दर्शाते हैं। आपके द्वारा दिए गए चिंतन को समझने से पूर्व हमें 15वीं शदी के मध्य की पृष्ठभूमि को जानना आवश्यक है। यह युग वैश्विक दृष्टि से वैचारिक क्रांति का युग था। इस समय विभिन्न प्रकार की विचारधाराओं का उदय हुआ। भारतीय परिवेश में महात्मा बुद्ध, भगवान महावीर तथा अनेकों महापुरुषों ने ईश्वरवाद तथा धर्म के विरुद्ध आवाज उठाई। चीन में लाओत्से और कन्फ्यूशियस जैसे दार्शनिक चिंतकों ने अपने चिंतन एवं विचारों से क्रांति खड़ी की। यूनान में सुकरात, पाइथागोरस तथा प्लेटो जैसे महान दार्शनिकों ने अपने चिंतन से क्रांति का विगुल फूँका तथा दुनिया के समक्ष यूनानी सभ्यता, संस्कृति एवं दर्शन को सर्वोपरि बना दिया। ईरान/पर्शिया के महान दार्शनिक, आध्यात्मिक गुरु और पारसी धर्म के संस्थापक जरथुस्त्र ने अपने चिंतन को नई दिशा देने का कार्य किया। विश्व के अनेक देश भी अपने-अपने स्तर से विभिन्न महापुरुषों के द्वारा दिये गए चिंतन को एक नई दिशा देने का कार्य कर रहे थे। जम्भोजी के साहित्य का सामाजिक एवं पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से तो काफी अध्ययन एवं चिंतन मनन हुआ लेकिन दार्शनिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से इसका अध्ययन अपेक्षित है।

बीज शब्द- सामाजिक अस्थिरता, धर्मधृता, ग्लोबल वार्मिंग, पर्यावरण, तिलांजलि, आध्यात्मिक सुख, शाश्वत, वैश्विक, विश्वीय संप्रदाय, महाविनाश, उलवंग, मसीते, मस्जिद, खेजड़ी

दार्शनिक दृष्टिकोण- गुरु जम्भोजी अपने समय के महान दार्शनिक, पंथ संस्थापक तथा आध्यात्मिक गुरु थे आपका चिंतन सामाजिक, आर्थिक और राजनीति के दृष्टि से जीवन पर गहरा प्रभाव डालता है। आपके द्वारा स्थापित बिश्वी संप्रदाय आपके दार्शनिक दृष्टिकोण का ही प्ररिणाम है। आपके द्वारा रचित सबदवाणी तथा जम्भवाणी में दार्शनिक चिंतन के अनेकों साक्ष्य मिलते हैं। गुरु जी का चिंतन अत्यंत ही संयमित, आदर्शपूर्ण और साम्यवादी है। आपने अपने विचारों से प्रत्येक धर्म, वर्ग एवं वर्ण को प्रभावित किया। तभी तो आपके द्वारा स्थापित बिश्वी पंथ चिंतन परंपरा 500 वर्षों से भी अधिक से निरंतर से चली आ रही है।

यज्ञ और हवन को हम केवल धार्मिक अनुष्ठान या अन्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया गया धार्मिक कृत्य मानते हैं लेकिन गुरु जम्भोजी दोनों को मनुष्य जीवन के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं इसलिए उन्होंने प्रतिदिन घरों के अंदर हवन करने को आवश्यक बताया क्योंकि हवन केवल धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं अपितु यह पर्यावरण संरक्षण एवं मनुष्य के उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। गौ घृत से किया जाने वाला हवन वर्तमान में वायु प्रदूषण को रोकने में बहुत ही कारगर है। जम्भोजी का यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण था। इसलिए तो हमारे ऋषि मुनि एवं संत वैदिक काल से यज्ञ एवं हवन को प्रमुखता से महत्व देते चले आ रहे हैं। आपका चिंतन अपने अंदर आधुनिकता बोध के अनेक आयामों को समेटे हुए हैं क्योंकि आपकी अमृतवाणी में दार्शनिक चिंतन के साथ-साथ वैज्ञानिक प्रगतिशीलता एवं नवीन दृष्टिकोण के स्वर सुनाई पड़ते हैं इसलिए तो आपकी अमृतवाणी को पंचम वेद कहते हैं। जम्भोजी परमात्मा को सर्वव्यापी मानते हैं। उनके अनुसार ईश्वर घट-घट में व्याप्त है। संपूर्ण सृष्टि उसी एक परम ज्योति का प्रसार है-

"ओ३म् भवन-भवन म्हें एका जोती। चुन-चुन लिया रतना मोती।" (सबद-6)

इस भौतिक जगत के कण-कण एक ही परम तत्व की ज्योति व्याप्त है प्रत्येक जीव में स्थित आत्मा उसी परमात्मा का प्रतिबिंब है। यह विचार उपनिषदों के अद्वैतवाद और सर्व खल्विदं ब्रह्म के सिद्धांत से मेल खाता है।

जम्भोजी के साहित्यिक चिंतन में ईश्वर का स्वरूप निराकार और असीम है। इसलिए आप सर्वव्यापी मानते हुए कहते हैं-

"सप्त पताले तिहूँ त्रिलोके, चवदा भवने गगन गहीरे।

बाहर भीतर सर्व निरंतर, जहां चीन्हों तहां सोई।" (सबद-40)

परमात्मा किसी एक स्थान तक सीमित नहीं है। वह सातों पाताल, तीनों लोक, चौदह भुवन और गहरे आकाश में हर जगह मौजूद है। वह भीतर भी है बाहर भी ; साधक जहाँ भी सच्चे मन से उसे स्मरण करता है। वह वहीं प्रकट हो जाता है।

मुक्ति और मोक्ष के दार्शनिक पक्ष को प्रकट करते हुए जम्भोजी आत्म चिंतन और अहंकार का त्याग करने की बात करते हैं जब तक मनुष्य 'मैं और मेरा' की भावना से मुक्त नहीं होगा तब तक उसे ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। इस सन्दर्भ में आपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं-

"जे नर दावो छोडयो मेर चुकाई राह, तेंतीसों की जाणी।" (4)

जब मनुष्य धन, दौलत और इस नश्वर देह पर से अपना दावा छोड़ देगा तथा मेरे तेरे और अहंकार की भावना को पूरी तरह समाप्त कर देगा। उस दिन उसे वास्तव में परम चेतना या मुक्ति का सच्चा मार्ग मिल जाएगा। गुरु जंभेश्वर की सबदवाणी का दार्शनिक चिंतन हठयोगी, नाथपंथ और संत काव्यधारा विचारक जैसे तुलसी, कबीर और गोरखनाथ आदि के विचारों के समान है इनका चिंतन निर्गुणब्रह्म, आंतरिक शुद्धि और कर्मवाद पर आधारित है। व्यवहारिक जीवन जीते हुए परमतत्व को प्राप्त करना ही उनकी वाणी का मूल उद्देश्य है। गुरु जम्भोजी ने भी आत्मा और परमात्मा को एक ही माना है उनके अनुसार ईश्वर वाह्य जगत में नहीं बल्कि उनके स्वयं के अंदर विद्यमान है-

"गुरु चीन्हौ गुरा पुरख विदेही, घट ही भीतरि खोजी देही।

घट ही भीतरि देव दुनी, घट ही भीतरि नौ सै नदी।" (5)

मनुष्य को ईश्वर की खोज अपने ही भीतर करनी चाहिए क्योंकि यह मानव शरीर ही ब्रह्मांड का लघु रूप है जिसमें समस्त देव, नदियाँ और तीर्थ विद्यमान हैं। मध्यकालीन संत, दार्शनिक एवं समाज सुधारक कबीरदास के ईश्वर संबंधी विचारों से गुरु जम्भोजी के विचार बहुत अधिक समानता रखते हैं। कबीर भी अपने अनेक पदों में ईश्वर को वाह्य जगत में खोजने की अपेक्षा ईश्वर को अपने अंदर तलाश करने की बात करते हैं क्योंकि जिस मनुष्य ने ईश्वर को अपने अंदर खोज लिया। वह सांसारिक प्रपंचों एवं मोह माया के बंधन से मुक्त हो जाएगा और सच्चे अर्थों में उसे ईश्वर प्राप्त अथवा ज्ञान प्राप्त हो जाएगा तभी तो कबीर दास कहते हैं-

"मो को कहाँ ढूढे बँदे मैं तो तेरे पास में।

ना मैं देवल, ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।" (6)

गुरु जम्भोजी का दार्शनिक चिंतन निर्गुण ब्रह्म की उपासना पद्धति को अपनाने को अधिक महत्व देता है। उन्होंने सृष्टि निर्माण से पूर्व की परिस्थितियों को शून्य कहा है उक्त संदर्भ में आप अपनी सबदवाणी में एक सबद उद्धरत करते हुए कहते हैं-

"ऊँ गुरुजी, तुम देव अनन्त कला रूप, अलख पुरुष अविनाशी।

शून्य मंडल में वास तुम्हारा, जोत जगे परकासी। "7

गोस्वामी तुलसीदास रामचरितमानस के बालकांड में कहते हैं कि सगुण और निर्गुण में कुछ भेद नहीं है। वेद पुराण संत, ऋषि मुनि, पंडित आदि सभी का ऐसा मानना है-

"सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा।

गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा।।"8

गुरु जम्भोजी ने मध्यकालीन संतो (कबीर रविदास गोरखनाथ तथा तुलसी आदि) की भाँति संसार की नश्वरता और माया के जाल को समझना आपके दर्शन का मुख्य बिंदु है। यह भी अन्य संतों की तरह माया को भ्रम मानते हैं क्योंकि मोह माया के बंधन में फँसकर मनुष्य अपना जीवन व्यर्थ कर लेता है। जम्भोजी कहते हैं-

"थावर जंगम जीव न जाने, काल न छोड़े कोई।

यह संसार कचा कांच का चूड़ा, फूटत वार न होई।"9

ज्ञानी माया का त्याग परम आवश्यक मानते हैं लेकिन माया का त्याग करना इतना आसान नहीं है। माया का सुख इतना सुखदायी होता है कि मनुष्य से उसे छोड़ते नहीं बनता। वह इसके चक्कर में पड़कर पतन की ओर जाना पसंद करता है लेकिन माया का मोह नहीं छोड़ता। कबीर काम, क्रोध, मोह, मद और मत्सर को माया के पांच पुत्र मानते हैं तभी तो वे डाकिनी, हासिनी जैसे शब्दों का प्रयोग करते हुए माया के संदर्भ में रहते हैं।

"मीठी-मीठी माया तजी न जाई। अग्यानी पुरिष को भोली भोली खाई।"10

गुरु जम्भोजी कबीरदास की भाँति ब्रह्म और जगत के दार्शनिक सत्य को जानने के लिए जीवन में सतगुरु का होना परम आवश्यक मानते हैं क्योंकि गुरु ही अज्ञान के अंधकार को मिटाकर तथा ज्ञान का मार्ग दिखाकर आत्मा का परमात्मा से मिलन कराता है। संसार तथा मोह माया को समझने में हमारी मदद करता है जिससे हम सांसारिक प्रपंचों से बचे रहे-

"सतगुरु मिलिया तौ संसै छुट्टा, अभै पद पाया भाई।"11

सतगुरु की महिमा के संबंध में कबीरदास कहते हैं कि गुरु का मेरे जीवन पर बड़ा ही उपकार है। गुरु ही ने मेरी ज्ञानरूपी आंखों को खोलकर, मुझे अनंत परमात्मा और सत्य के दर्शन करा दिए-

"सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।

लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार।।"12

जम्भोजी का आत्मचिंतन अहंकार त्याग ने पर बल देता है। आपका मानना है कि मनुष्य जब तक 'मैं और मेरा' की भावना से मुक्त नहीं होगा तब तक उसे ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। जब तक मनुष्य का धन दौलत और इस नश्वर शरीर से मोहभंग नहीं होगा। तब तक उसके अंदर से अहंकार की भावना पूरी तरह समाप्त नहीं होगी। तब तक वास्तव में उसे परम चेतना के दर्शन, मुक्ति का सीधा मार्ग प्राप्त नहीं होगा-"जे नर दावो छोडयो मेर चुकाई राह, तेतीसों की जाणी।"13 अहंकार मोह माया में पड़ा हुआ व्यक्ति यही सोचता है कि इसी से वह परमात्मा को पा लेगा लेकिन ईश्वर को पाने के लिए उसे अहंकार और ममता का त्याग करना पड़ेगा। इस संदर्भ में कबीर कहते हैं-

"जब मैं था तब हरि नही, अब हरि है मैं नाहिं।"14

पर्यावरण संरक्षण - जम्भोजी ने पर्यावरण संरक्षण की बात उस समय की जब लोग पर्यावरण संरक्षण के बारे में पूरी तरह से जागरूक नहीं थे। ऐसे समय आपने पर्यावरण संरक्षण का संदेश देकर अपने आधुनिक होने का परिचय तो दिया साथ ही विश्व को ऐसी नवीन सोच दी जिसको लेकर सरकारें आज तक योजनाएँ बनाकर कार्य रही हैं। आपने पर्यावरण पर ही नहीं अपितु भूजल संरक्षण, जीव संरक्षण तथा अनेकों सामाजिक बुराइयों पर कुठाराघात करके मानव कल्याण का संदेश दिया। यदि हम आपके द्वारा बनाए नियमों का अक्षरांश पालन करें तो विश्व की समस्त धरती स्वर्ग बन जाएगी और हम उस स्वर्गरूपी जीवन के भागीदार होंगे। पर्यावरण संरक्षण की बात हो और हम खेजड़ली बलिदान पर चर्चा न करें ऐसा संभव ही नहीं क्योंकि खेजड़ली राजस्थान के जोधपुर जिले में एक गाँव है। यहाँ विश्व की लगभग प्रथम पर्यावरण संरक्षण को लेकर एक बड़ी घटना हुई। 12 दिसंबर सन् 1730 ई. में खेजड़ली को बचाने के लिए अमृता देवी विश्रोई तथा उनकी तीन बेटियों सहित कुल 363 लोगों ने बलिदान दिया। उसे समय आपने बहुत ही ऐतिहासिक वाक्य कहा- "सिर साठे रूख रहे, तो भी सस्तो जाण।" अर्थात् यदि एक सिर के कटने से पेड़ बच जाता है, तो भी यह सौदा बहुत सस्ता है। जिस ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण की आज हम बात कर रहे हैं। गुरु जम्भेश्वर ने अपने चिंतन में उस पर्यावरण संकट पर चिंता व्यक्त करते हुए उसके समाधान के द्वार भी पेड़ व जीव जंतुओं के संरक्षण की बात करके खोल दिए थे लेकिन आज मनुष्य अपने विकास व सुख सुविधाओं के नाम पर अंधाधुंध प्रकृति का दोहन कर रहा है। जिसके कारण संपूर्ण मानव जाति पर महाविनाश का साया मंडरा रहा है यदि मनुष्य अभी नहीं जागा और पर्यावरण के प्रति सचेत नहीं हुआ तो परिणाम अत्यंत ही रूढ़ कंपा देने वाले होंगे। वर्तमान युग में मनुष्य प्रकृति से अपना तारतम्य नहीं बिठा पा रहा है। वह प्रकृति को केवल और केवल अपने भोग की वस्तु समझकर निरंतर प्रकृति का दोहन करता

जा रहा है जिसके कारण पर्यावरण संतुलन बिगड़ा रहा है। बार बार आ रही प्राकृतिक आपदाएँ इस बात का साक्षात् प्रमाण है। आज मनुष्य पंत की भाँति प्रकृति को सहचारी के रूप में स्वीकार कर ले तो देश दुनिया में ग्लोबल वार्मिंग, अनियन्त्रित प्राकृतिक आपदाएँ स्वतः ही घटित होनी लगभग बंद हो जाएंगी। "संत गुरु जंभेश्वर का जीवन दर्शन वैश्विक है। प्रकृति संरक्षण, पर्यावरण का संरक्षण, अहिंसा एवं नशा मुक्ति आदि उनके जीवन का मूल मंत्र है।"¹⁵

सामाजिक सुधार-ऐसा प्रतीत होता है कि गुरु जंभेश्वर के जीवन पर समकालीन संत समाज का पूर्ण प्रभाव था समकालीन समाज में अनेको बुराईयाँ प्रचलित थी जो मानवता एवं नैतिकता के मार्ग में बहुत बड़ा अवरोध थी। जिसके कारण समाज का ताना-बाना छिन्न-भिन्न होकर समाज टूटने बिखरने के कगार पर था। समाज का एक बड़ा वर्ग घुटन महसूस कर रहा था उसके साथ समाज में हो रहे अनैतिक कृत्य व व्यवहार पर वह स्वयं पर मनुष्य होने का प्रश्न खड़ा करता था। यह बुराईयाँ जाति-पाति, छुआछूत, ऊँची-नीच, कुसंगतियाँ जैसे झूठ, नशाखोरी, चरित्र गिरावट तथा अहिंसा आदि थी। भक्तिकालीन साहित्य में संत कबीरदास, रैदास, नानक और रामानंद जैसे संतों ने उक्त सभी सामाजिक बुराईयों का कड़ा विरोध किया। भक्तिकालीन अधिकतर संतों ने समानता का संदेश देकर सामाजिक भेदभाव मिटाया क्योंकि ईश्वर ने सभी को समान बनाया है ईश्वर के सामने सभी बराबर हैं। भक्तिकालीन युग में बाह्य आडम्बर चरम पर थे तभी तो कबीर ने दिखावे तथा आडम्बरपूर्ण चरित्र का विरोध करते हुए हिंदू और मुसलमान को फटकारा। इस तरह जम्भोजी ने भी बाह्य आडम्बर का जमकर विरोध किया। आपका मानना है कि मनुष्यों को अपने कर्म पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए मस्जिद पर चढ़कर जोर-जोर से ईश्वर को पुकारने से या पाहन पूजने से हरि नहीं मिलता क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञता है वह तुम्हारे कर्मों को भली भाँति जानता है। जब तक तुम अपने बुरे कर्मों को त्याग नहीं करोगे तब तक तुम्हारा पूजा पाठ करना और नमाज पढ़ने व्यर्थ है-

"चड़ि चड़ि भीते मड़ी मसीते क्यूँ उलबंग पुकारो।

कारण खोटा करतब हीणा, थारी खाली पड़ी निवाजु।"¹⁶

कबीरदास समन्वयवादी दृष्टि के विचारक एवं संत थे इसलिए उन्होंने किसी एक वर्ग विशेष या धर्म विशेष पर कटाक्ष नहीं किया बल्कि उन्होंने सभी वर्गों व धर्मों के बाह्य आडम्बर एवं रूढ़ियों का विरोध किया। आपने अपने साहित्य में इन बाह्य आडम्बरो को लेकर के हिंदू और मुसलमान को खूब फटकार लगाई है उन्होंने पाहन पूजा तथा बहरा हुआ खुदाय जैसे शब्दों का प्रयोग करके इन आडम्बरो को समाज के सामने लाकर आईना दिखाने की चेष्टा की है-

"कॉकर पाथर जोरि के मस्जिद लई चुनाय।

तापर चढ़ी मुल्ला वाँग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय।।"¹⁷

रूढ़ियों का विरोध-

मध्यकालीन भारतीय समाज अनेक रूढ़ियों, गलत परंपराओं तथा विसंगतियों में उलझा हुआ था-जैसे मूढ़ मुढ़ाना, जटाएं बढ़ाना व कानों में कुंडल पहनना आदि पाखंड अपने चरम पर थे जंभेश्वर जी ने इन रूढ़ियों, पाखंडों का विरोध किया आपका मानना था कि ईश्वर की प्राप्ति केवल भेष बदलने से नहीं होगी बल्कि इसके लिए मन वचन और कर्म को शुद्ध करना होगा-

"कैसौ कहा बिगारिया, जे मूड़े सौ बार मन को न काहे मूड़िए।

जामै विषै विकार।"¹⁸

इस बाहरी पाखंड का विरोध करते हुए कबीरदास जी भी कहते हैं कि सिर मुड़वाने से ही ईश्वर मिल जाता तो हर कोई मुड़वा लेता। यदि इस कारण ही भगवान मिलता तो भेड़ तो मोक्ष की सबसे पहले भागीदार होती। अर्थात् मोक्ष प्राप्ति हेतु कबीर आत्मा की शुद्धि पर अधिक बल देते हैं भेष बदलने पर नहीं-

"मूड़ मुड़ाये हरि मिलै, सब कोई लेहि मुड़ाये

बार-बार के मूड़ने, भेड़ बैकुंठ न जाए।।"

मूड़ मुड़वाने के संदर्भ में जम्भोजी अपनी जम्भवाणी में लिखते हैं कि मूड़ मुड़ाना मात्र एक दिखावा है। इस तरह के कृत्य से समाज को कोई लाभ नहीं होने वाला यदि मनुष्य को समाज के लिए वास्तव में कुछ करना ही है तो सांसारिक प्रपंचों, पाखंडों व रूढ़ियों को छोड़कर अपने मन का शुद्धिकरण करना होगा तभी एक आदर्श समाज का सपना साकार होगा-

"मूड़ मुड़ावौ मन न मुड़ावौ, मुहिं अभखल दिल लोभी।

अंदरि दया नहीं सुर काने।"¹⁹

अस्पृश्यता का विरोध-

छुआछूत को जम्भोजी ने समाज के लिए घोर निंदनीय कृत्य बताया है। वे सभी मनुष्य को समान मानते हैं। ईश्वर ने भी मनुष्य की बनावट में भेद नहीं किया है। समस्त मानव को ईश्वर की श्रेष्ठ सृष्टि मानते हैं इसलिए उन्होंने मानव-मानव में भेद का पुरजोर विरोध किया-

"तइया सासूं तइया मासूं तइया देह दमोई।
उतिम मधिम क्यों जाणी जै विवरसि देखो लोई।"²⁰

कबीर के वर्ण व्यवस्था विरोधी मत-

कैसे लोह, तुम्हारे कैसे दूध।
तुम कैसे ब्राह्मण पांडे हम कैसे सूद।"

जाति-पाति का विरोध-

गुरु जंभेश्वर सामाजिक समानता के प्रबल समर्थक थे इसलिए उन्होंने हिंदू धर्म में अनेकों जातियों व उपजातियों, उच्च-नीच तथा भेदभाव के सक्त विरोधी थे क्योंकि सभी मनुष्य ईश्वर की संतान हैं। इसलिए वह मनुष्य में भेद नहीं करते उनकी दृष्टि में सभी समान हैं। इस संदर्भ में परशुराम चतुर्वेदी कहते हैं कि "सभी मनुष्य एक ही मानव समाज के अंग हैं एक विशाल वृक्ष की विभिन्न शाखाओं के समान हैं। सबके मूल की शाखाओं की ओर दृष्टि डालने पर उनमें कोई अंतर दिखाई नहीं देता। इस कारण उन्हें एक दूसरे से पृथक् व उच्च-नीच नहीं समझना चाहिए।"²¹ गुरु जंभेश्वर मानवता विरोधी व्यवस्था की भर्त्सना करते हुए कहते हैं कि कोई भी व्यक्ति उच्च कुल में जन्म लेने से श्रेष्ठ नहीं हो जाता यदि वह शास्त्र सम्मत कार्य नहीं करता तो वह मनुष्य कदापि उत्तम नहीं हो सकता-

" उत्तम कुली का उत्तम न होयबा, कारण किरिया सारू"²²

भक्तिकालीन साहित्य के सभी संतो कबीरदास, रैदास, नानक और रामानंद आदि ने वर्ण व्यवस्था को उचित नहीं ठहराया है रामानंद समानता का संदेश देते हुए कहते हैं कि-'जाति-पाति पूछे न कोई। हरि को भजै सो हरि होई।' कबीर का मत है की सभी हाड़मांस से बने हैं इसलिए शुद्र नीच और ब्राह्मण उच्च कैसे हो सकता है शूद्रों को नीचे समझने वाले ब्राह्मण से कबीर प्रश्न करते हैं क्या हमारी नसों में लहू है और तुम्हारी नसों में दूध बहता है यदि नहीं तो आप ब्राह्मण और हम शुद्ध कैसे हो सकते हैं वह कहते हैं कि सभी एक ही पर ब्रह्म की ज्योति हैं-

"एक बूँद एकै मल मूतर, एक चाम एक गूदा।
एक जोति थे सब उपजा, कौन ब्राह्मण कौन सूदा।।"

तीर्थाटन का विरोध-

जम्भोजी ने सभी मध्यकालीन संतों की भाँति तीर्थाटन का विरोध किया है। आपका मानना है कि सभी तीर्थ स्वयं मनुष्य के हृदय में विराजमान है वह व्यर्थ में ही ईश्वर को बाह्य जगत् में खोजता फिरता है -

"अठ सठि तीरथ हिरदै भीतर बाहरि लोकाचारू।"²³

तीर्थ यात्रा के संदर्भ में कबीर कहते हैं मुझे तू व्यर्थ में इधर-उधर खोज रहा है मैं तो तेरे पास में ही हूँ-

"मो को कहाँ ढूँढे बंदे मैं तो तेरे पास में।

ना मैं देवल, ना मैं मस्जिद, ना कावै कैलास में।।"

जीव हत्या का विरोध-

जैन धर्म की भाँति गुरु जंभेश्वर ने जीव हत्या की कड़ी निंदा की है आपकी जन्म वाणी में जीव हत्या व वृक्षों को काटने के विरोध में अनेकों सबद हैं क्योंकि दोनों ही पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण घटक हैं वृक्षों में भी जीवन होता है-

"सोम अमावस आदित वारी, काय काटी वणरायौ।"²⁴

जम्भोजी सभी जीवों की हत्या को अनुचित बताते हुए कहते हैं-

"काढै भाग करक दुहेली जायौ जीव न घाई।"²⁵

गुरु जम्भोजी बैल बकरा आदि को बधिया कराने को अनुचित मानते हैं क्योंकि नपुंसक करने की प्रक्रिया अत्यंत पीड़ादायक होती है। भारत की अधिकतर आबादी गाँव में बसती है। और गाँव का मुख्य आय का स्रोत खेती किसानों की है। खेती किसानों व आजीविका का मुख्य स्रोत पशुपालन है और जब हम उसी की नसबंदी करा देंगे या काटकर खा जाएंगे तो प्रकृति संतुलन बिगड़ जाएगा। गुरुजी उक्त स्थितियों को दूर करने का उपदेश देते हैं-

"अमर रखावै थाट बैल बधिया न करावै।"²⁶

शोध अध्ययन का उद्देश्य- प्रस्तुत शोधलेख का उद्देश्य गुरु जम्भोजी की सामाजिक एवं दार्शनिक मान्यताओं की उपयोगिता का वर्तमान संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता का अध्ययन करना है। जम्भोजी को समझने के लिए हमें मध्यकालीन भक्ति कालीन समाज की पृष्ठभूमि को समझना पड़ेगा और यह पृष्ठभूमि आदिकाल से प्रभावित है। यह समय राजनीतिक दृष्टि से काफी उथल-पुथल का था। सामाजिक अस्थिरता चरम पर थी। धर्मांधता भी अपने उच्च शिखर पर थी। जिसके कारण मनुष्य समकालीन परिस्थितियों में नरकीय जीवन जीने के लिए मजबूर था। भक्ति कालीन सभी संतों की भाँति गुरु जंभेश्वर ने

भी सामाजिक अन्याय जैसे वर्ण व्यवस्था, सामाजिक विषमता, रूढ़ियों तथा आडम्बर मुक्त समाज के सपने को साकार करने का आवश्यक प्रयत्न किया। मनुष्य के लोक कल्याण तथा नैतिक उत्थान का विकल्प का समकालीन समाज में एक तरह से नवजागरण अथवा पुनरुत्थान करने का कार्य किया।" मध्यकालीन सभी संतों का लक्ष्य वैयक्तिक जीवन से ऊपर उठकर लोकहित तथा समाज कल्याण था। मानव-मानव के मध्य भेद, शोषण, अहंकार तथा तदयुगीन समाज में व्याप्त बाह्य आडम्बर को देखकर यह संत मौन न रह सके। फलस्वरूप उन्होंने अपनी वाणी का उपयोग उपर्युक्त बुराइयों के विरोध तथा मानव को जागृत करने हेतु किया।²⁷

इस शोध लेख अध्ययन के उद्देश्य प्रस्तुत करने से पूर्व कुछ प्रश्न आपके समक्ष रखना चाहूँगा। क्या समाज में वर्ण व्यवस्था एवं वैमनस्य फैलाकर समाज का उत्थान हो सकता है? क्या जातिवाद, अंधविश्वास, रूढ़ियों, हिंसा, आडम्बर युक्त व्यवस्था में एक उन्नत समाज की कल्पना की जा सकती है? क्या पूँजी को चंद हाथों में सौंप कर पूँजीवाद की पुनर्स्थापना जैसा नहीं है जिससे शोषक और शोषित वर्ग पैदा होंगे और समाज का ताना-बाना छिन्न-भिन्न होने का खतरा और अधिक बढ़ जाता है। क्या पर्यावरण की गर्दन पर पैर रखकर उन्नति और विकास के शिखर तक पहुँचना देश दुनिया के हित में होगा? तब आपका जवाब होगा कभी नहीं होगा बल्कि इससे समाज केवल और केवल पतन की ओर जाएगा हो सकता है कि हम अपनी सुख सुविधाओं के लिए पर्यावरण व जीव जंतुओं को तिलांजलि देकर क्षणिक सुख की अनुभूति एवं आत्मिक शांति प्राप्त कर ले। अंततः हमें गहन दुख तथा पर्यावरण संकट का सामना करना ही पड़ेगा और पर्यावरण संकट मनुष्य के जीवन पर संकट है क्योंकि पर्यावरण, जीव जंतु और मानव जीवन एक दूसरे के पूरक हैं इसलिए जम्भोजी की सामाजिक एवं दार्शनिक मान्यताओं का अध्ययन करना अपेक्षित है।

गुरु जम्भोजी की शिक्षाएँ वर्तमान संदर्भ में इसलिए अत्यंत प्रासंगिक हैं क्योंकि यह मनुष्य के जीवन एवं पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी है। आपने जो 29 नियम बनाए वह किसी विशेष वर्ग जाति एवं धर्म के लिए नहीं अपितु वे तो संपूर्ण मानवता के लिए शाश्वत हैं। यह बात अलग है कि बिश्वोई संप्रदाय में इन नियमों का विशेष महत्व है वह अक्षरांश पालन करते हैं।

उपसंहार - जम्भोजी अपने चिंतन एवं दर्शन में केवल भारतीयों का कल्याण ही नहीं किया अपितु संपूर्ण जगत के कल्याण हेतु कार्य किया। इसलिए आपका जीवन दर्शन वैश्विक है। प्रकृति संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, अहिंसा, जीव हत्या, नशा मुक्ति एवं समाज सुधार जैसे ज्वलंत एवं वैश्विक समस्याओं पर अपने विचार प्रकट कर सच्ची मानवता का संदेश संपूर्ण विश्व को दिया। प्रकृति दोहन जिसके कारण पर्यावरण की समस्या पूरी दुनिया के सामने विकराल राक्षस के समान मुंह खोले खड़ी है जैसे मानो वह संपूर्ण पृथ्वी को निकाल कर ही दम लेगा देश दुनिया की सरकारें इस समस्या से जूझ रही हैं। इससे निकलने के लिए सम्मेलन किया जा रहे हैं। सरकारें आने वाले 10, 20 व 50 वर्षों के लिए योजनाएं बना रही हैं ताकि इसके प्रभाव से आने वाली प्राकृतिक आपदाओं से बचा जा सके। आज मनुष्य और प्रकृति अपना आपस में तालमेल स्थापित नहीं कर पा रहे हैं। जिसके कारण ग्लोबल वार्मिंग, अनियंत्रित प्राकृतिक आपदाएं घटित हो रही है।

हमारे प्राचीन ग्रंथों में कहा गया है कि प्रकृति मनुष्य का पोषण करती है परंतु मनुष्य प्रकृति के दोहन में लगा है जीव हिंसा से प्रकृति और मानव के बीच संतुलन बिगड़ गया है जिसकी वजह से अनेकों बीमारियाँ एवं भयंकर आपदाएं आ रही हैं इनका और अधिक खतरा बढ़ता जा रहा है। इसलिए प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत ने 'पल्लव' की भूमिका में प्रकृति को मनुष्य की सहचरी के रूप में स्वीकार किया है-"कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली है..... प्रकृति के सहचर्य ने जहाँ एक ओर मुझे सौंदर्य, स्वप्न और कल्पना जीवी बनाया है.....।"²⁸

संदर्भ सूची

1. संप्या. वियोगी हरि-ब्रजमाधुरी सार, सं. 2002, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ. 146
2. <https://bishnoisabdvani.blogspot.com>
3. <https://bishnoisabdvani.blogspot.com>
4. गुरु जम्भोजी-सबदवाणी, सबद 42.
5. वही, सबद 12.
6. संप्या. डा. श्याम सुन्दरदास-कबीर ग्रंथावली, सं. 2041 वि. ना. प्र. सभा, काशी पृ. 42.
7. गुरु जम्भोजी-सबदवाणी, सबद 1.
8. तुलसीदास-रामचरितमानस, बालकाण्ड दोहा 116.
9. गुरु जम्भोजी-सबदवाणी, सबद 64.
10. संप्या. डा. श्याम सुन्दरदास-कबीर ग्रंथावली, सं. 2041 वि. ना. प्र. सभा, काशी पृ. 28.
11. गुरु जम्भोजी-सबदवाणी, सबद 2.

- 12.संम्पा.डा. श्याम सुन्दरदास-कबीर ग्रंथावली,सं.2041वि.ना.प्र.सभा,काशी पृ.1.
- 13.गुरु जम्भोजी-सबदवाणी,सबद 42.
- 14.संम्पा.डा. श्याम सुन्दरदास-कबीर ग्रंथावली,सं.2041वि.ना.प्र.सभा,काशी पृ.27.
- 15.संम्पा. प्रो.मोहन,प्रो.कृष्ण कुमार कौशिक, डॉ.मनमोहन लटियाल-वर्तमान परिदृश्य में जम्भोजी का चिन्तन,जम्भाणी साहित्य अकादमी,बीकानेर पृ.122.
- 16.डॉ. सोहनराज तातेड़,डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा-जम्भेश्वर भगवान के सृष्टि को अवदान,सं.2015,साहित्यगार,चौड़ा रास्ता,जयपुर पृ.38.
17. डॉ.पुष्पपाल सिंह-कबीर ग्रंथावली सटीक पृ.77.
18. डॉ.किशना राम बिश्रोई-जम्भवाणी मूल संजीवनी व्याख्या,सं.1996, गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय प्रकाशन,हिसार,सबद 8/1 पृ.32.
19. वही,सबद 46/2 पृ.172.
20. डॉ.हीरालाल महेश्वरी-जम्भवाणी,सबद 39:1-2 पृ.345.
21. डॉ.शिवाजी देवरे-कबीरदास सृष्टि और दृष्टि पृ.126.
22. डॉ. हीरालाल महेश्वरी- जम्भोजी बिश्रोई संप्रदाय और साहित्य,भाग 1 सं.1969 सबद 24:4 वी.आर.पब्लिकेशन,कोलकाता पृ. 328.
23. डॉ.किशना राम बिश्रोई-जम्भवाणी मूल संजीवनी व्याख्या,गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय प्रकाशन,हिसार 82/1 पृ.301.
24. डॉ. हीरालाल महेश्वरी-जम्भवाणी,सबद 6:3-4 पृ.309.
- 25.वही,सबद 7:3 पृ.311.
26. आचार्य कृष्णानन्द टीकाकार-जम्भसागर, 8वां सं.2013,जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर पृ.38.
- 27.डॉ.सुदर्शन मजीठिया-संत साहित्य,सं.1962,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली पृ.360.
28. सुमित्रानंदन पंत-पल्लव (भूमिका से) सं.1928 प्रकाशन प्रयाग (इलाहाबाद)